शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

की प्रस्तुति

माह- जून 2022

अंक- १

सामाजिक, शैक्षिक, नैतिक और देशभक्ति गीतों का नया संग्रह

गीतांजलि सृजन

मिशन शिक्षण संवाद

आओ हाथ से हाथ मिलाएँ, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ।

#9458278429

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 01.06.2022,

दिन- बुधवार

01

आओ पेड़ लगाएँ...

तर्ज़-
झिलमिल सितारों का आँगन होगा....

हम सब को पेड़ लगाना होगा,
धरती को सुन्दर बनाना होगा।
प्रकृति के संरक्षक बनके आना होगा,
हम सबको पेड़ लगाना होगा।।

ये देते हैं छाया शीतल,
और देते ऑक्सीजन।
फल, फूलों से लदी डालियाँ,
सबको देते भोजन।।

सबको यही समझाना होगा,
हम सबको पेड़ लगाना होगा।

आओ मिलकर कसम ये खाएँ,
इन्हें न कटने देंगे।
प्रकृति की अनमोल धरोहर,
इन्हें न हटने देंगे।।

धरती पे हरियाली लाना होगा,
हम सबको पेड़ लगाना होगा।

रचना:-
आर० के० शर्मा (प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० चित्रवार,
क्षेत्र- मऊ, जनपद- चित्रकूट

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 02/06/2022

दिन- गुरुवार

02

चलो बच्चों....

तर्ज़- चलो सजना! जहाँ तक हवा चले....

चलो बच्चों!
कि फिर स्कूल चलें।
कि घण्टी देखो बजे...
दिए जो बुझ रहे हैं,
जगमगा के जलें।।

देकर मात कोरोना को,
खुशियाँ फिर से आए।
हर बच्चा अपने घर से,
विद्यालय को जाए।।

बहन चले, भाई चले
कि फिर स्कूल चलें।।

सुन्दर सपने देखो,
फिर से तुम किताब के।
प्रश्न करो तैयार फिर,
हिन्दी के, हिसाब के।।

तुम चलो हम चलें,
कि फिर स्कूल चलें।।

मंजिल फिर सपनों की,
होगी अपने पास में।
होगा हाथ तुम्हारा,
देश के विकास में।।

तुम चलो, हम चलें,
कि फिर स्कूल चलें।।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका" (स०अ०)
प्रा० वि० धनीपुर,
क्षेत्र- धनीपुर, अलीगढ़, उ०प्र०

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण
मिशन शिक्षण संवाद
दिनांक- 03/06/2022
गीतांजलि
दिन- शुक्रवार

03

तर्ज़- नदियाँ चले चले रे धारा

कन्या भ्रूण हत्या

मै हूँ छोटी सी गुड़िया,
प्यारी जादू की पुड़िया।
मेरे जन्म की खातिर माँ,
तुमको लड़ना होगा।।
तुमको लड़ना होगा..

बेटी बिना सूना घर-बार,
सूना है यह सब संसार।
मेरे जन्म की खातिर माँ,
तुमको कहना होगा।।
तुमको कहना होगा..

मैं भी तेरा अंश हूँ माँ,
झेलूँ भ्रूण हत्या का दंश क्यूँ माँ?
मेरे जन्म की खातिर माँ,
तुमको अड़ना होगा।।
तुमको अड़ना होगा..

मैं भी बनूँगी तेरा सहारा,
ना समझो मुझे टूटा तारा।
मेरी चमक की खातिर माँ,
तुमको भिड़ना होगा।।
तुमको भिड़ना होगा..

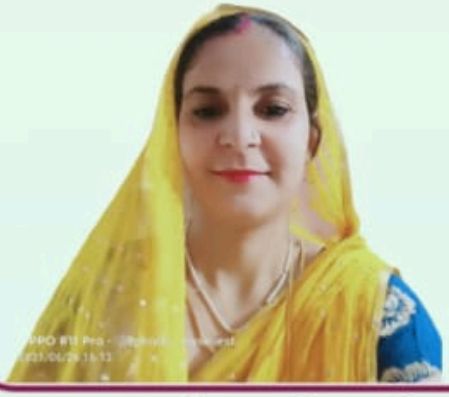

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर,
परीक्षितगढ़, मेरठ

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 04/06/2022

दिन- शनिवार

04

तर्ज- तुझे सूरज कहूँ या चन्दा

जल ही जीवन

Save The Water

उपहार प्रकृति का जल है,
तुम व्यर्थ न इसे बहाओ।
पानी बिन जीवन मुश्किल,
कीमत सबको बतलाओ।।

खाने, पीने, धोने में,
जल का उपयोग है होता।
जब नीर नही मिलता तो,
जग का हर प्राणी रोता।।
अपशिष्ट पदार्थों से अब,
जल को दूषित न बनाओ।
पानी बिन .....

पोखर, तालाब, नदी सब,
दिन-प्रतिदिन सूख रहे हैं।
पशु-पक्षी, पेड़ और पौधे,
जल की कमी झेल रहे हैं।।
हैजा, पेचिश, डायरिया,
रोगों को न फैलाओ।
पानी बिन .....

अद्भुत है जल की महिमा,
जल संरक्षण का नारा।
जल को संचित करने से,
बच पाएगा जग सारा।।
सृष्टि का सृजन भी जल से,
खुद समझो और समझाओ।
पानी बिन .....

रचना- मंजू शर्मा (स०अ०)
प्रा०वि० नगला जगराम
सादाबाद, हाथरस

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 06/06/2022

दिन- सोमवार

05

पर्यावरण से प्रेम

तर्ज- सुबह-सवेरे लेकर तेरा नाम प्रभु....

पर्यावरण से प्रेम सदा कर पाएँ हम।
हरियाली को देख सुखी हो जाएँ हम।।

मिट्टी देती हमको सुख नहीं भूलें हम,
साफ-स्वच्छ रख इसको मन में फूलें हम।.ओ..ओ..
मृदा प्रदूषित बिल्कुल नहीं कर पाएँ हम,
हरियाली को देख सुखी हो जाएँ हम।।

मात-पिता, गुरुओं से प्रकृति को सीखें हम,
मिट्टी का उपजाऊपन पहचानें हम।.ओ..ओ..
बीजों का रोपण कर फसल उगाएँ हम,
हरियाली को देख सुखी हो जाएँ हम।।

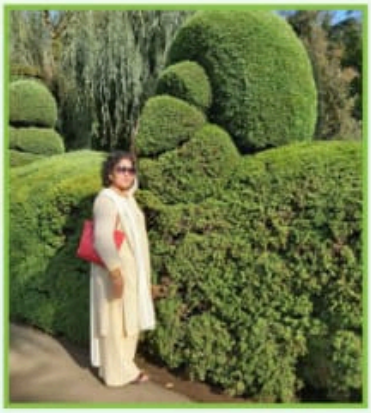

जागरूक बच्चों को भी करपाएँ हम,
सही समय शिक्षित कर कृषक बनाएँ हम।.ओ..ओ..
खेती की गुणवत्ता को सिखलाएँ हम,
हरियाली को देख सुखी हो जाएँ हम।।

सही समय पर सींचे इतना जानें हम,
खरपतवार हटावें, नहीं बढ़ने दें हम।.ओ..ओ..
पौधे, वृक्ष, लताएँ मोहें मन हरदम,
हरियाली को देख सुखी हो जाएँ हम।।

रचना- नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
वि० क्षे०- मथुरा, जिला- मथुरा

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 07/06/2022

दिन- मंगलवार

06

तर्ज - बच्चे मन के सच्चे.....

मजदूर दिवस

बच्चे, छोटे बच्चे, हमसे मजदूरी न कराओ।।
छोटे-छोटे हाथ हमारे, हम पर तरस तो खाओ।।
बच्चे--- छोटे बच्चे---

माना अभी गरीब हैं, दिल के मगर अमीर हैं,
जेब में पैसे थोड़े कम, यह अपनी तकदीर है,
करते जो मजदूरी हैं, उनकी तो मजबूरी है,
हम बच्चों की मजबूरी का फायदा ना उठाओ।।
बच्चे--- छोटे बच्चे---

हमको आगे बढ़ने दो, पढ़-लिखकर कुछ करने दो,
माता-पिता की इच्छा यह, हमको पूरी करने दो,
डॉक्टर, पुलिस बनेंगे हम, हम में अभी बहुत है दम,
हम बच्चों को खूब पढ़ाकर आगे राह दिखाओ।।
बच्चे--- छोटे बच्चे----

जब हम बड़े हो जाएँगे, देश में नाम कमाएँगे,
देश की खातिर हम अपनी, जान भी दे जाएँगे,
पर अभी तो बच्चे हैं, अक्ल के थोड़े कच्चे हैं,
उम्र हमारी बहुत है कम, कुछ तो शर्म अपनाओ।।
बच्चे--- छोटे बच्चे---

रचना

हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा० वि० मुकन्दपुर
लोधा, अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 08-06-2022

दिन- बुधवार

07

आओ पेड़ लगाएँ

गर्मी के हथौड़ों से, पाना चाहो निजात रे।
आओ पेड़ लगाएँ हम, आओ पेड़ लगाएँ हम।।
अग्नि की लपेटों से, जग हुआ बेचैन रे।
आओ पेड़ लगाएँ हम, आओ पेड़ लगाएँ हम।।

पेड़ों से ही ये जीवन है, सब जीते इन्हीं से।
ऑक्सीजन देते हैं यही और न आये कहीं से।।
जब पेड़ ही न रह पाएं तो क्या होगा ये सोच रे।
खाली वसुधा लगे कैसी, मन सोच के घबराये।।

तर्ज- अँखियों के झरोखों से..

भोजन, हवा, पानी, छाया देते ये सभी को।
सब एक हैं इनके लिए, रोकें न किसी को।।
एक इनके भरोसे पे सारी दुनिया है घूमती।
ये हों नहीं धरती पे तो पशु पक्षी उजड़ जाएँ।।

ये पेड़ लगें पृथ्वी पे, जैसे हों आभूषण।
अपशिष्ट भगाकर करें, ये दूर प्रदूषण।।
पाया है हमने इनसे तो कुछ हम भी देकर जाएँ।
अपनी धरती को दुल्हन सा सजाएँ हम।।

रचना

रश्मि (प्र० अ०)
प्रा० वि० गुलाबपुर
भाग्यनगर, औरैया।

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 09.06.2022

दिन- गुरुवार

08

बेटियों की पुकार

तर्ज- दीवाना आदमी को बनाती हैं रोटियाँ...

आधार ज़िन्दगी का होती हैं बेटियाँ,
छुप-छुपके फिर भी कितना-2.. रोती हैं बेटियाँ।
आधार जिन्दगी का होती हैं बेटियाँ.....

मत मारो इनको कोख़ में, जन्म लेने दीजिए,
तोड़ो नहीं पंखुड़ियाँ, इन्हें खिलने दीजिए।
मार्मिक पुकार हमसे..2..करती हैं बेटियाँ,
छुप-छुपके फिर भी कितना रोती हैं बेटियाँ॥
आधार जिन्दगी का.....

उन्मुक्त आसमां में इन्हें उड़ने दीजिए,
पढ़-लिखके अपने सपने इन्हें गढ़ने दीजिए।
एक मुट्ठी आसमाँ को...2..माँगती हैं बेटियाँ,
छुप-छुपके फिर भी कितना रोती हैं बेटियाँ॥
आधार जिन्दगी का.....

बेड़ियों से मुक्त होके, मुस्कुराने दीजिए,
सरगम पे गीत इनको गुनगुनाने दीजिए।
नित त्याग और समर्पण...2 करती हैं बेटियाँ,
छुप-छुपके फिर भी कितना रोती हैं बेटियाँ॥
आधार जिन्दगी का.....

ईश्वर का खूबसूरत वरदान बेटियाँ,
सृष्टि पे सदा होती हैं एहसान बेटियाँ।
क़ुर्बान सारी ख़्वाहिशें....2 करती हैं बेटियाँ,
छुप-छुपके फिर भी कितना रोती हैं बेटियाँ॥
आधार जिन्दगी का.....

रचना- पूनम नैन (स0अ0)
उ0 प्रा0 वि0 मुकुन्दपुर
वि0 क्षे0- छपरौली, जनपद- बागपत

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 10/06/2022

दिन- शुक्रवार

09

बेरोजगारी

तर्ज:- सलाम ए इश्क मेरी जान

ए शासन! तुम युवाओं की,
जरा सी बात सुन लो।
बड़ी मुश्किल है राहों में,
की उनकी सुध-बुध लो।।
युवा सब बेचैन है
नौकरी के लिए।।2।।

जीवन में है देखो हताशा भरी,
उम्मीदें भी उनकी हैं अब ढली।
बूढ़े माँ-बाप का है सहारा युवा,
बिना नौकरी के है वो हारा हुआ।।
मोहताज है वो
नौकरी के लिए।।2।।

आत्महत्या भी बढ़ती ही जाती यहाँ,
जाए तो भी जाए युवा अब कहाँ।
दर-दर को ठोकर वो खाता रहा,
अपने दुख को सबको बताता रहा।।
खोया अमन-चैन है
नौकरी के लिए।।2।।

रचना-
सुधांशु श्रीवास्तव (स०अ०)
प्रा० वि० मणिपुर
क्षेत्र- ऐरायां, जनपद- फ़तेहपुर

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 11/06/2022

दिन- शनिवार

10

विद्यालय ज्ञान के मन्दिर

तर्ज- सूरज कब दूर गगन से

आओ हम सब मिलकर,
बेसिक का मान बढ़ाएँ।
शिक्षा की ज्योति जलाकर,
अज्ञान का अन्धकार मिटाएँ।।

विद्यालय तो ज्ञान के मन्दिर हैं
मिलती यहाँ शिक्षा है.....

हम नवाचार अपनाकर,
शिक्षण को सरल बनाएँ।
खेल-खेल में बच्चों को,
उत्तम संस्कार सिखाएँ।।

विद्यालय तो ज्ञान के मन्दिर.....

अभिभावक जागरूक होकर,
बच्चों विद्यालय पहुँचाएँ।
शिक्षा के महत्व से हम,
जन-जन को परिचित करवाएँ।।

हर बच्चे को मिले शिक्षा,
हम मिलकर कदम बढाएँ।
बच्चे भी उत्तम शिक्षा पाकर,
जग में नाम कमाएँ।।

विद्यालय तो ज्ञान के मन्दिर...

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

11

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

(तर्ज- ये दुआ है मेरी रब से..)

आओ नमन करें हम, पराक्रम दिवस मनाएँ।
23 जनवरी को जन्मे, रक्त वीर को शीश नवाएँ।।
अनुपम अमर कहानी, जिसकी तुम्हें सुनाएँ,
नाम वीर सुभाष उसका, शब्दांजलि चढ़ाएँ।।
आओ नमन करें हम.....

देने जवाब गोरों को, धरती पर आया था।
आजादी माँगे कुर्बानी, सबको समझाया था।।
जय हिन्द का दे नारा, अपने कदम बढ़ाये।
23 जनवरी को जन्मे रक्त वीर को शीश नवाएँ।।
आओ नमन करें हम.....

मोटी खाकी पहने वह, वीर शिवाजी जैसा था।
साम दाम दण्ड भेद जाने, यदुनन्दन के जैसा था।।
दमका वह बनके हीरा, अंग्रेज थरथराये।
23 जनवरी को जन्मे, रक्त वीर को शीश नवाएँ।।
आओ नमन करें हम.....

आजादी का वो परिन्दा, पिंजरा तोड़ के आया था।
हिन्द फौज की सेना भी, साथ में फिर वह लाया था।।
किस्मत से ज्यादा खुद पर, विश्वास जो जताये।
23 जनवरी को जन्मे, रक्त वीर को शीश नवाएँ।।
आओ नमन करें हम...

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० जारी भाग-1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 14.06.2022

दिन- मंगलवार

12

तर्ज- है प्रीत जहाँ की रीत सदा...

गीत- देश की बात

मैं सीधा-सादा सा कवि हूँ,
बस देश की बात सुनाता हूँ।
भारतवासी हूँ, मैं हरदम,
बस उसकी कथा सुनाता हूँ।।

इस देश में जन्मे महामानव,
जो ईश्वर के अवतारी हैं।
जीवन बगिया सींची जिनने,
बौछार प्रेम की मारी है।।
बस इसी प्रेम को उर में भर,
मैं सबको आज दिखाता हूँ।
भारतवासी हूँ,....सुनाता हूँ।।

इस देश की डाली-डाली पर,
हैं खिले विविध रंग फूल सभी।
इस देश के आँगन-आँगन में,
किलकारी भरते बाल सभी।।
इस किलकारी को घर से मैं,
नित शाला तक पहुँचाता हूँ।।
भारतवासी हूँ,... सुनाता हूँ।।

मैं सीधा-सादा सा कवि हूँ,
निज देश की बात सुनाता हूँ।
भारतवासी हूँ,..... सुनाता हूँ।।

रचना

जुगल किशोर त्रिपाठी (शि0मि0)
प्रा0 वि0 बम्हौरी
वि0 क्षे0- मऊरानीपुर
जनपद- झाँसी

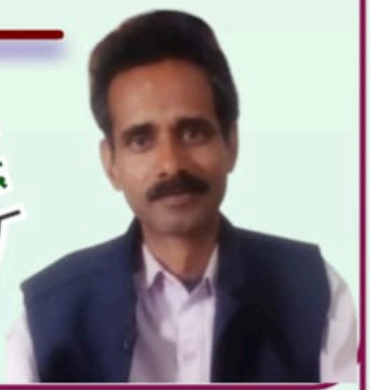

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 15.06.2022, दिन- बुधवार

13

लेके अँगना में खुशियाँ...

तर्ज़- पारम्परिक देवी गीत....

मोरे अँगना में खुशियाँ हजार लायी हो
कुल तारन घर बिटिया हमार आयी हो।।

मंगल उत्सव खूब मनइयो,
द्वारे पे दियना बार आयी हो।
मोरे अँगना में खुशियाँ हजार लायी हो,
कुलतारन घर बिटिया..

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ...

सृष्टि का अनमोल खजाना,
देवी स्वरूपा अवतार आयी हो।
मोरे अँगना में खुशियाँ हजार लायी हो,
कुलतारन घर बिटिया..

भेद तनक ना इनमें करियो,
यही सृजन का संसार लायी हो।
मोरे अँगना में खुशियाँ हजार लायी हो,
कुलतारन घर बिटिया...

रचना:-
आर० के० शर्मा (प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० चित्रवार,
क्षेत्र- मऊ, जनपद- चित्रकूट

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक-16/06/2022

दिन- गुरूवार

14

तर्ज:- तेरे होठों के दो फूल प्यारे-प्यारे।

---बेटी---

देखो सृष्टि की अजब ये माया,
नारी गर्भ में पुरूष समाया।
रही नारी फिर क्यों बिचारी?
क्यों बिचारी?

यहाँ जिस दिन जन्मी बेटी,
वहाँ खायी गयी न रोटी।
हुआ मनवां उदास, देखो कैसी है ये प्यास?
वो माँ भी जग से हारी,
क्यों बिचारी?

किया लालन पालन माँ ने,
बेटी को है खूब पढ़ाया।
आज पैरों खड़ी, आयी है वो घड़ी,
चली फिर भी दहेज कटारी।
क्यों बिचारी?

वो शुभ दिन घर में आया,
जब ढूँढा है वर अधिकारी।
इधर खुशियाँ बँटें, उधर माँगें बढ़ें।
वो तो माँगे दहेज फरारी।
क्यों बिचारी?

रचना

दीप्ति कठियार (स0अ0)
उ0प्रा0वि0गढ़ी कटैया
लोनी,गाज़ियाबाद

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक-17/06/2022

दिन- शुक्रवार

15

तर्ज: ये तो सच है कि भगवान है

विद्यालय की जान बच्चे

बच्चे विद्यालय की जान हैं,
हर शिक्षक का सम्मान हैं।
बच्चों से ही विद्यालय सजा,
हम गुरुओं की पहचान है।।
बच्चे.....

अपने विद्यालय को, नाम इनसे मिला,
ज्ञान इनको दिया, इनका बचपन खिला।
इनकी मुस्कान से, मन प्रफुल्लित हुआ,
सींच के हमने भी, इनको जग को दिया।
क्या कहें और क्या ना कहें,
ये बताना ना आसान है।।
बच्चों से ही.....

पलकों पर इनके जो, नन्हे सपने सजे,
हम इन्ही सपनों को, यहाँ करते जवां।
नवसृजन भाव ले चले पंथ पर,
देश के नौनिहालों को हम, ज्ञान से सींचते है यहाँ,
भारत की प्राण वायु है ये,
इस माटी की ये मान है।।
बच्चों से ही.....

रचना

शालिनी गुप्ता (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय मुर्धवा
म्योरपुर, सोनभद्र

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 18/06/2022

दिन- शनिवार

16

गर्मी का है मौसम बदला- बदला चहुँ ओर

तर्ज़- सावन का महीना पवन करे शोर

गर्मी का है मौसम,
बदला-बदला चहुँ ओर।
तर-तर बदन पसीने से,
व्याकुल मन करता शोर।।
हो ओ ओ.....

रामा है धूप लगे तेज बड़ी दिन में,
पवन मस्तानी चले-रुके पल भर में।
तापमान बढ़ जाये, चले ना कोई जोर।।
तर-तर बदन.....

पंखे और कूलर, ए० सी० बने हैं सहारा,
पेड़ों की छाँव सबको लगे अति प्यारा।
शीतल पेय और आइसक्रीम, माँगे दिल ये मोर।।
तर-तर बदन.....

लू के थपेड़े दिन में उमस भरी रातें,
जीव-जन्तु व्याकुल सब करते हैं बातें।
वृक्ष लगाये मानव, यही खुशियों का ठौर।।
तर-तर बदन.....

रचना

अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
क्षेत्र- बड़ागाँव, जनपद- वाराणसी

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 20/06/2022

दिन- सोमवार

17

मेरे देश की धरती
तर्ज-मेरे देश की धरती

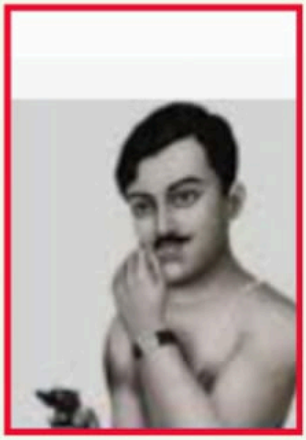

मेरे देश की धरती पावन,
पावन इसका नाम रे।
आओ सुनाऊँ तुम्हें कहानी,
छोड़ो कुछ आराम रे।।
मेरे देश की धरती पावन....

पंजाब का लाल भगत सिंह,
देखो करे कमाल रे।
भरी सभा में फेंक दिया बम,
देखो करे कमाल रे।।
मेरे देश की धरती पावन....

झाँसी की रानी मर्दानी,
खूब लड़ी मैदानों में।
नाम अमिट लिख डाला,
जिसनें इतिहास के पन्नों में।।
मेरे देश की धरती पावन....

नाम बताया आज़ाद जिसने,
कोड़े खाये बचपन में।
नाक में दम किया गोरों के,
छू नहीं पाये उस तन रे।।
मेरे देश की धरती पावन...

सुभाषचन्द्र से लाल है जन्में,
मेरे देश की माटी ने।
आजाद हिन्द का डंका बजाया,
जा जिसने जापान रे।।
मेरे देश की धरती पावन...

रचना-
श्रीमती भावना शर्मा (स०अ०)
क० वि० नारंगपुर
क्षेत्र- परीक्षितगढ़, जनपद- मेरठ

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 21/06/2022

दिन- मंगलवार

18

तर्ज़- है अपना दिल तो आवारा।

करो योग, रहो निरोग

योग करने की आदत को,
अपने जीवन में ढालो तुम।
मिले छुटकारा रोगों से,
स्वस्थ जीवन बनालो तुम।।

नियमित करना अभ्यास,
कोई रोग ना आये पास।
बन जाये हर दिन खास, प्राणायाम से।।
सकारात्मक मिले ऊर्जा,
आध्यात्मिक ज्ञान पा लो तुम।
योग.....

मिले ऑक्सीजन भरपूर,
करो प्राणायाम जरूर,
शारीरिक दोष हों दूर, योगाभ्यास से।
इम्युनिटी पॉवर हो मजबूत,
टेंशन अपनी भगा लो तुम।।
योग.....

फुर्तीला रहता तन,
खुशहाल बने जीवन,
एकाग्र रहे यह मन, योगाभ्यास से।
कब्ज जब बने गर्म पानी,
समय से प्रतिदिन पी लो तुम।।
योग.....

सुन्दरता, शक्ति अपार,
योग से हो चमत्कार,
आये ना कोई विकार, प्राणायाम से।
शीर्षासन हो या वज्रासन,
ताकत सबकी आजमा लो तुम।।
योग.....

रचना

मंजू शर्मा (स०अ०)
प्रा०वि० नगला जगराम
वि०क्षेत्र- सादाबाद
जनपद- हाथरस

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 22/06/2022

दिन- बुधवार

19

स्वच्छता अभियान

तर्ज- तू जहाँ-जहाँ चलेगा, मेरा साया....

स्वच्छता का मिशन अपना सारा देश स्वच्छ होगा।
कहीं गन्दगी मिले ना, नहीं अस्वस्थ कोई होगा।।
सारा देश... सारा देश....

सभी चाहें स्वच्छता, नहीं कहीं कूड़ा-कचरा घर हो।
कहीं नहीं रहें मक्खी-मच्छर, नहीं रुकी गन्दगी हो।
हरतरफ हों पेड़-पौधे, जग हरा-भरा होगा।।.....

स्वच्छ भारत का जो सपना, बापू जी ने दिखाया,
अब उनके श्री चरणों में, हमने अपना फर्ज निभाया।
स्वच्छता को ध्येय रखकर ही, पुष्पांजलि अर्पण होगा।।...

करते प्रेम सभी हैं, भारत से स्वदेशवासी,
उन्नति के मूल में है, समाहित स्वच्छता भी।
हम स्वच्छ ही रखेंगे, यह दृढ़ संकल्प होगा।।....

खुले में शौच रोका, घर में इज्जतघर बनाकर,
अभियान से जुटे हम, सिर सम्मान से उठाकर।
अधिकारी, देशवासी, कार्यकर्ता भी स्वस्थ होगा।।...

रचना- नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
वि० क्षे०- मथुरा, जिला- मथुरा

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 23/06/2022

दिन- गुरुवार

20

तर्ज़- ज़िन्दगी की न टूटे लड़ी

विदाई गीत

है विदाई की आयी घड़ी,
और बारात द्वारे खड़ी।
नीर नैनों से बह जाने दो,
बड़ी शुभ है, ये शुभ है घड़ी।।
बारात ----------

वो अँगना भी अँगना है क्या?
जिस आँगन में बेटी न हो।
वो शहनाई, शहनाई नहीं,
जिसमें कोई रवानी न हो।
ग़म में भी है खुशी की लड़ी।।
बारात----------

बिटिया! तेरे बिना
सूना लागे रे अँगना...

आज से अपना कुछ ना रहा?
हम रोयेंगे जी भर कर।
दिल को समझाएँगे हम सभी,
बेटी जाती है गयी मुख मोड़कर।।
ज़िन्दगी की ये रीत है बड़ी।।
बारात----------

तू हुई दूर हमसे तो क्या?
तुमसे प्यारा तो कुछ भी नहीं।
घर की हर एक दहलीज़ पर,
किसी का कोई पहरा नहीं।।
नहीं छूटेगी बाबुल की गली।

ओ बिटिया, ओ बिटिया
बिटिया रे बिटिया
सूना लगे रे अँगना...

रचना

रुखसाना बानो (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय अहरौरा
वि० क्षे०- जमालपुर
जनपद- मिर्ज़ापुर

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 24-06-2022

दिन- शुक्रवार

21

मृदा संरक्षण

मिट्टी बचाओ रे, न जाने दो बेकार में।

तर्ज- झुमका गिरा रे....

बचपन में हम इसमें खेले, काटी जिन्दगानी।
इसकी गाथा सबने गायी, हमने सुनी जुबानी।
मत इसको बर्बाद करो, फिर याद आएगी नानी।
अब तो भैया जाओ सुधर बहुत करी मनमानी।
हाँ बहुत करी मनमानी।
मिट्टी से ही हम सब हैं, जीते इस संसार में।
मिट्टी बचाओ रे...

मिट्टी से फसलें उपजे हैं, उपजें औषधि सारी।
आलू, गोभी, धनिया, मिर्ची, उगती सब तरकारी।
जरूरत सबकी पूरी करे ये मिट्टी प्यारी-प्यारी।
मिट्टी जो बर्बाद हुई, आ जाये विपदा भारी।
आ जाये विपदा भारी।
मिट्टी बचाना है, लाओ इसको व्यवहार में।
मिट्टी बचाओ रे...

रचना

रश्मि (प्र० अ०)
प्रा० वि० गुलाबपुर
भाग्यनगर, औरैया।

22

बसन्त का मौसम आया

(तर्ज- मिलो न तुम तो..)

प्रेम गीत है धरा ने गाया, भँवरों ने शोर मचाया।
बसन्त का मौसम आया, बसन्त का मौसम आया।।
झूम रही अमवा की डारी, सौन्दर्य चहूँ ओर छाया।
बसन्त का मौसम आया, बसन्त का मौसम आया।।

गमन हुआ शरद ऋतु का,
आगमन हुआ ऋतुराज का।
कोयल की तानों में,
मन बावरा कहीं खो गया।।
सरसों की हरियाली देखकर सबका मन हर्षाया।
बसन्त का मौसम आया, बसन्त का मौसम आया।।

जन्मी हैं नव कलियाँ नव कोपल,
नवपल्लवें भी रही हैं मचल।
होऽऽ नील गगन में पक्षियों की है हलचल,
जन्मी हैं नव कलियाँ नवकोपल।।
छटा अनोखी लगे धरा की, चहूँ ओर उमंगों का साया।
बसन्त का मौसम आया, बसन्त का मौसम आया।।

प्रेम गीत है धरा ने गाया, भँवरों ने शोर मचाया।
बसन्त का मौसम आया, बसन्त का मौसम आया।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० जारी भाग-1
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

23

भ्रष्टाचार

तर्ज:- ये चाँद कोई दीवाना है

ये भ्रष्टाचार मिटाना है,
ये रोग बड़ा पुराना है।
सबको ये सताये, सबको रुलाये,
इसको हमें जड़ से मिटाना है।।

कहीं नौकरी का मैटर हो,
एरियर, ट्रांसफर का लेटर हो।
सबको हर काम की जल्दी है,
बिदाई कहीं, तो हल्दी है।
देकर के पैसा, करें सब ऐसा,
अन्धानुन्ध कमाना है।।

समाज को देखो ये खाये,
अन्दर से खोखला बनाये।
मिलजुलकर साथ आना है,
सबको साथ निभाना है।
जो राह गलत हो, उस पर न पथ हो,
सही राह पर जाना है।।

रचना-
सुधांशु श्रीवास्तव (स०अ०)
प्रा० वि० मणिपुर
क्षेत्र- ऐरायां, जनपद- फ़तेहपुर

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 28.06.2022

दिन- मंगलवार

24

तर्ज - यह देश है वीर जवानों का

मेरा देश है माँ और बहनों का

मेरा देश है माँ और बहनों का,
और प्यारी-प्यारी बेटियों का।
इन बेटियों का यारों,
इन बेटियों का यारों क्या कहना।
बेटियाँ हैं दो घर का गहना।।

दुःख-सुख में देती साथ सदा,
करती हैं सारे फर्ज अदा।
यह घर में रौनक,
यह घर में रौनक करती हैं।
हँस-बोलके घर में रहती हैं।।

शिक्षा की अलख जगाती हैं,
हिम्मत और धैर्य दिखाती हैं।
मेहनत से आगे,
मेहनत से आगे बढ़ती हैं,
प्रकाश चहुँ ओर करती हैं।।

बेटों से आगे निकल रहीं,
मन लगाकर पढ़ाई कर रहीं।
हर क्षेत्र में आगे,
हर क्षेत्र में आगे बढ़ती हैं।
ना किसी के आगे झुकती हैं।।

मेरा देश है------

रचना

सीमा शर्मा (स0अ0)
प्राथमिक विद्यालय निवाड़ा
बागपत, बागपत

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 29/06/2022

दिन- बुधवार

25

बंजर हो रही धरती सारी

तर्ज- माई नी माई मुँडेर पे तेरी

बंजर हो रही धरती सारी,
आओ पेड़ लगाएँ।
मिलकर करें प्रयास ऐसा,
मिट्टी को बचाएँ।।
हो हो .....

देखो अपनी मिट्टी सारी,
खो रही उर्वरा शक्ति।
उपजाऊ मिट्टी बह जाती,
बढ़ती अनुपजाऊ मिट्टी।।

आओ मिलकर हम सब,
फिर से वृक्ष लगाएँ।
धरती को करें हरा भरा,
मिट्टी को उपजाऊ बनाएँ।।
हो हो हो.....

रासायनिक खादों का करके प्रयोग,
हमने भूमि को बंजर बनाया।
हरे पेड़ों को काट के हमने,
अपनी करनी का फल पाया।।

आओ हम सब मिलकर,
फिर से पेड़ लगाएँ।
धरती को करें हरा-भरा
मिट्टी को उपजाऊ बनाएँ।।
हो हो.....

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि०अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

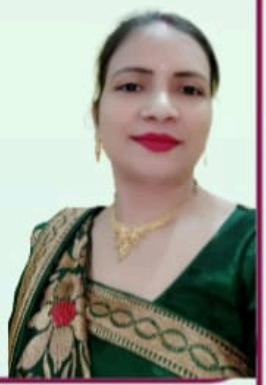

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि

दिनांक- 30.06.2022

दिन- गुरुवार

26

तर्ज- जीना है तो, हँस के जियो

पढ़ना है तो मन से पढ़ो

पढ़ना है तो मन से पढ़ो,
जीवन में तुम फेल होना ना।
पढ़ना ही तो है जिन्दगी,
अनपढ़ का जीवन बिताना ना।।
पढ़ना है तो.....

होता दुःखी है क्यों बाल रे,
तेरा उभरता है भाल रे।
कष्टों को सहन, कर मन को कड़ा,.
कल पाएगा अपने को बड़ा।
जीवन में उड़ती अजब धूल है,
इस धूल में तुम भिचकना ना।

पढ़ना है तो मन से पढ़ो,
जीवन में तुम फेल होना ना।।
पढ़ना है तो.....

सेवा गरीबों की कर जाएगा,
मानव बड़ा कोई बन जाएगा।
आशीषों से गुरुओं के सब,
संकट टलें, न ही दुःख आएगा।।

हरियाली फैलाओगे तुम यदि,
कोई प्रदूषण फिर होगा ना।
पढ़ना है तो मन से पढ़ो,
जीवन में तुम फेल होना ना।।
पढ़ना ही तो है जिन्दगी,
अनपढ़ का जीवन बिताना ना।।
पढ़ना है तो.....होना ना।।

रचना

जुगल किशोर त्रिपाठी (शि0मि0)
प्रा0 वि0 बम्हौरी
वि0 क्षे0- मऊरानीपुर
जनपद- झाँसी

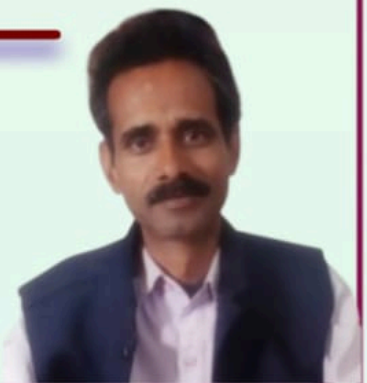

मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

रचनाकारों की सूची

01- आर० के० शर्मा, चित्रकूट
02- पूनम गुप्ता, अलीगढ़
03- भावना शर्मा, मेरठ
04- मन्जू शर्मा, हाथरस
05- नैमिष शर्मा, मथुरा
06- हेमलता गुप्ता, अलीगढ़
07- रश्मि, औरैया
08- पूनम नैन, बागपत
09- सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर
10- मृदुला वर्मा, कानपुर देहात
11- ज्योति विश्वकर्मा, बाँदा
12- जुगल किशोर त्रिपाठी, झाँसी
13- आर० के० शर्मा, चित्रकूट
14- दीप्ति कटियार, गाज़ियाबाद
15- शालिनी गुप्ता, सोनभद्र
16- अरविन्द कुमार सिंह, वाराणसी
17- भावना शर्मा, मेरठ
18- मन्जू शर्मा, हाथरस
19- नैमिष शर्मा, मथुरा
20- रुखसाना बानो, मिर्जापुर
21- रश्मि, औरैया
22- ज्योति विश्वकर्मा, बाँदा
23- सुधांशु श्रीवास्तव, फतेहपुर
24- सीमा शर्मा, बागपत
25- मृदुला वर्मा, कानपुर देहात
26- जुगल किशोर त्रिपाठी, झाँसी

तकनीकी सहयोग

1- नैमिष शर्मा, मथुरा
2- जितेन्द्र कुमार, बागपत

मार्गदर्शन- राजकुमार शर्मा, चित्रकूट

संकलन :- गीतांजलि सृजन टीम